वर्ष : 34, अंक : 133, जनवरी–मार्च, 2012

राजभाषा भारती

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद-500030

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में 7 सितंबर, 2011 को निदेशालय के प्रभारी निदेशक डॉ. एस वी राव के द्वारा हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया गया। इस सप्ताह के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस समारोह के दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिओं जैसे–छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, प्रश्न-मंच, निबंध लेखन, श्रुतलेखन (शुद्ध लेखन), सोचो और लिखो, टिप्पण एवं आलेखन तथा निदेशालय में संचालित अनुसंधान आधारित विषयों पर हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया। जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े-ही उत्साह के साथ भाग लिया।

प्रो. कट्टिमणी ने कृषक संस्थानों पर जोर देते हुए बताया कि कृषक संस्थानों के कार्य केवल प्रयोगशाला उन्मुख न होकर कृषकोंन्मुख होने चाहिए। अर्थात् अनुसंधान कर्ताओं को अपनी बात कृषक की भाषा में ही सामने रखनी चाहिए। तभी उनके कार्यों की सार्थकता है। आज भारत के जन-सामान्य में हिंदी का ही वर्चस्व है और हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। निदेशक डॉ. पाटील ने अपने अध्यक्षीय भाषण में 'हिंदी की क्यूं?', को विश्लेषित करते हुए कहा कि यह तो सब जानते हैं कि भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है और इसका एक प्रमुख कारण जनभाषा हिंदी भी है जो विविध भाषा-भाषियों के एक सूत्र में बांधे हुए है। उन्होंने बताया कि इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया। अत: अब हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम राजभाषा हिंदी में कार्य करें और राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें।